लाला मुल्खराज सराफ

□ डॉ० सत्यपाल श्रीवत्स

स्व० लाला मुल्खराज सराफ जहां जम्मू-कश्मीर की गण्य-मान्य हस्तियों में से एक हैं। वहां उन्हें इस राज्य के पत्रकारिता के इतिहास में प्रणेता के रूप में जाना जाता है।

मुझे स्मरण है कि 1946 ई० में जब मैं छोटा था और अपने गांव के प्राइमरी स्कूल में पढ़ता था तो लाला जी द्वारा सम्पादित दैनिक उर्दू पत्र 'रणवीर' हमारे घर डाक द्वारा आया करता था। हमारे ताया स्व० पं० शम्भुदत्त इस पत्र के नियमित ग्राहक एवं पाठक थे। जम्मू प्रांत के जिला कठुआ की बसोहली तहसील (अब विलावर) का हमारा सुराड़ी-सियालना नामक वह गांव सड़क से बहुत दूर था। डाकिया बिलावर से पैदल चल कर हमारे यहां समाचारपत्र देने सप्ताह में एक बार आया करता था।

हमारे ताया जी जो उस प्रदेश के नेता माने जाते थे—'पं० शम्भुदत्त शेरें आला' उपनाम से प्रसिद्ध थे। पत्र पर उनका पता भी पं० शम्भुदत्त शेरें आला लिखा होता था।

हम बच्चे 'रणवीर' को ताया जी के हाथ में बड़ी उत्सुकता से देखा करते थे, इसलिए नहीं कि हम उसे पढ़ना चाहते थे क्योंकि हमें उर्दू तो आती नहीं थी बल्कि इसलिए कि समाचारपत्र का लम्बा चौड़ा आकार और उसमें छपे कुछ चित्र हमारी उत्सुकता का कारण थे। न जाने इन्हीं कारणों से या किसी अज्ञात कारण से हमारे हृदयों में पत्र को देखते ही एक रोमांचक जिज्ञासा सी भर उठती थी।

भले ही उन दिनों स्व० नरसिंह दास नरगिस द्वारा सम्पादित साप्ताहिक चांद (उर्दू) भी हमारे घर में आया करता था। पर 'रणवीर' के प्रति हमारा

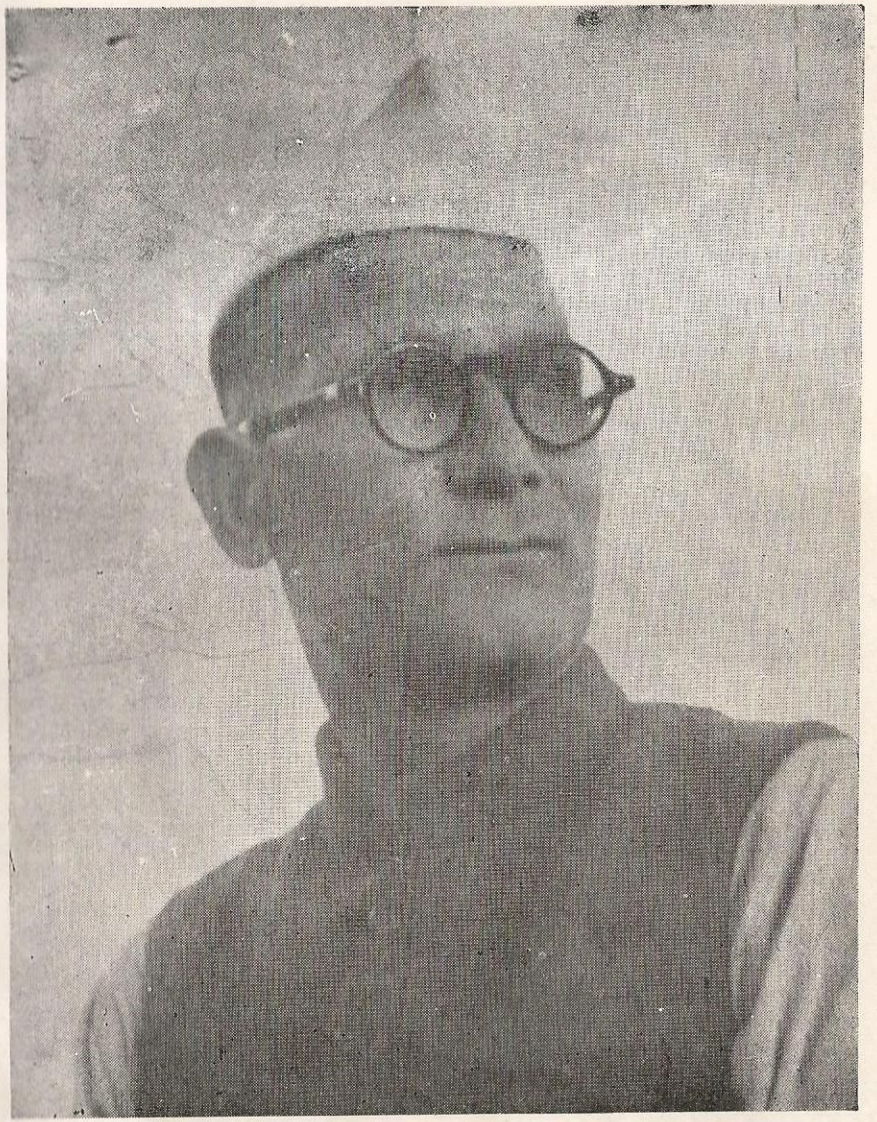

लाला मुल्खराज

विशेष ही आकर्षण हुआ करता था। हमारे ताया जी भी अक्सर 'रणवीर' की ही प्रशंसा करते थे। ताया जी उस प्रदेश की सामाजिक तथा राजनैतिक गतिविधियों के बारे में उसमें लेख भी भेजा करते थे। जब ताया जी ने तत्कालीन महाराजा हरिसिंह की सरकार द्वारा किसानों द्वारा उत्पादित तम्बाकू पर कर थोपने देने का आंदोलन छेड़ दिया तब स्व० लाला जी ने अपने पत्र के माध्यम से उस आंदोलन को अत्यन्त प्रशंसनीय ढंग से प्रोत्साहित किया। उन दिनों ताया जी उक्त आंदोलन से सम्बन्धित जो भी समाचार या लेख आदि भेजते वह उस पत्र में अधिकतर मुख पृष्ठ पर छपता था।

अन्ततः जब उस आंदोलन के आगे महाराजा की सरकार ने झुक कर किसान के कुल तम्बाकू उत्पादन में से पांच मरले भूमि पर उत्पादित तम्बाकू पर कर माफ कर दिया तो ताया जी ने प्रसन्न होकर उस का सारा श्रेय लाला जी को दिया था। जब मैं बड़ा होने और कुछ पढ़ लिख जाने पर उर्दू भाषा का भी कुछ ज्ञान प्राप्त कर गया तो मैं भी बड़े शौक से 'रणवीर' पढ़ने लगा। उन दिनों उस पत्र में लाला जी के जो निर्भीक सम्पादकीय छपा करते थे, उनकी अपनी गरिमा होती थी। उस समय जबकि हमारी रियास्त के लोग दोहरी गुलामी में जी रहे थे—इस प्रकार निष्पक्ष, निर्भीक, तीखे व्यंग्य भरे सम्पादकीय एवं समाचार छापना कोई आसान बात नहीं थी।

सन् 1952-53 में जब स्व० रामकृष्ण ज्योतिषी ने "पीस ब्रिगेड" की बागडोर सम्भाली तो उसके माध्यम से मेरा परिचय स्व. लाला जी के पुत्रों ओम् सराफ, सूरज सराफ, फिल्मी जगत की प्रसिद्ध हस्ती वेद राही तथा सत सराफ के साथ हुआ और उन्हीं के द्वारा स्व० लाला जी से भी परिचय हुआ। वह भव्य व्यक्तित्व और सौम्य स्वभाव पहले साक्षात्कार में ही मेरे हृदय पर अपनी छाप छोड़ गया था। पढ़ाई के लिए मैं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में चला गया था। वहां से लौटा तो फिर इस परिवार के सम्पर्क में ही नहीं आया अपितु स्व० लाला जी की प्रेरणा से पत्रकारिता-व्यवसाय की ओर भी आकर्षित हुआ और उन्हीं के नाम से हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स आदि हिन्दी समाचारपत्रों में समाचार भी भेजने लगा जिससे पारिश्रमिक मिलने के कारण मैं और अधिक उत्साहित होकर बड़े परिश्रम से कार्य करने लगा। तदुपरांत भाग्यवश सरकारी नौकरी स्वीकार करके पुञ्छ कॉलेज में व्याख्याता हो गया। पर सराफ परिवार के साथ यथावत और जुड़ा रहा। जब कभी भी जम्मू आता समय निकाल कर अवश्य लाला जी के दर्शनार्थ जाता। वास्तव में लाला जी के व्यक्तित्व का ही यह गुण था कि जो कोई भी उनके सम्पर्क में आता उन से प्रभावित हुए बिना

नहीं रह सकता था। इतना ही नहीं कई पढ़े लिखे युवक तो उनकी प्रेरणा मात्र से ही पत्रकारिता के व्यवसाय में कूद पड़ते थे।

इस महान पत्रकार का जन्म जम्मू प्रांत के एक छोटे नगर साम्बा में आठ अप्रैल 1894 में हुआ था। उस समय साम्बा नगर का वह सराफ परिवार बड़ा ही साधारण था। बालक मुल्खराज अभी ग्यारह वर्ष की ही थे, वे अनाथ हो गए। अपने चाचा के आश्रय में रहते हुए कई प्रकार की आर्थिक तथा अन्य कठिनाइयां झेलते हुए भी प्रतिभाशाली बालक मुल्खराज ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और उच्च श्रेणी में दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उस प्रतिभाशाली बालक के सामने यद्यपि अत्यन्त आर्थिक संकट था तो भी उसने 1914 में जम्मू आकर वहां के अपने समय के अत्यन्त प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान "प्रिंस आफ वेल्ज़ कॉलेज में दाखला लिया और अत्यन्त लगन तथा परिश्रम से बी० ए० पास की।

जम्मू रहते हुए युवक मुल्खराज सराफ ने अपने प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करते हुए अध्ययन से बचे हुए समय को बाह्य ज्ञान की पुस्तकों, समाचारपत्रों तथा स्तरीय पत्रिकाओं के अध्ययन में व्यतीत किया। इससे उनकी प्रतिभा अधिक प्रखर हुई। क्योंकि उन की किसी भी विषय को गम्भीरता से समझने-पचाने की शक्ति पहले ही अद्भुत थी।

जम्मू के उक्त कालेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त करके वे लाहौर के विधि कॉलेज में भर्ती हो गये। उन्हीं दिनों अमृतसर के जलियां वाले बाग में हुए नरसंहार से उन्हें गहरा आघात लगा। अत: उसने उसी दिन से अंग्रेज सरकार के विरुद्ध चल रहे संघर्ष में शामिल होकर स्वतन्त्रता प्राप्त करने का निश्चय कर लिया। उन्ही दिनों पंजाब के प्रसिद्ध नेता लाला लाजपत राय अमेरिका से लौट कर आए थे। और आते ही वह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान चुने गए थे। तब युवा मुल्खराज भी उनके सम्पर्क में आये और लाला जी की प्रेरणा से वह दैनिक 'बन्दे मातरम्' के उप-सम्पादक नियुक्त हुए। इस प्रकार नियमित रूप से युवा मुल्खराज सराफ पत्रकारिता के व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण मनोयोग के साथ उतर पड़े।

इस व्यवसाय से जुड़ कर भी वे समय-समय पर लाला लाजपतराय से प्रेरणा अवश्य लेते रहे। उन्हीं दिनों लाला मुल्खराज के मन में जम्मू से एक दैनिक पत्र आरम्भ करने की योजना पनपने लगी जो धीरे-धीरे इतनी दृढ़ हो गई कि मुल्खराज जी को 'बन्दे मातरम्' पत्र के उप-सम्पादक के पद से त्यागपत्र देकर जम्मू आना पड़ा।

जम्मू पहुंचते ही उन्होंने उर्दू दैनिक 'रणवीर' के प्रकाशन की योजना तैयार कर ली यद्यपि साम्राज्यवाद के उस युग में यह काम अत्यन्त कठिन था। प्रारम्भ में मुल्खराज जी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इतना नहीं महाराजा प्रतापसिंह की सरकार ने उस उर्दू दैनिक के प्रकाशन को रोकने के लिये अनेक रुकावटें डालीं परन्तु स्व० लाला जी ने हार नहीं मानी और उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा। अन्तत: 28 जून 1924 को उनकी चिर अभिलाषा पूरी हुई जिससे उर्दू रणवीर (साप्ताहिक) का नियमित प्रकाशन प्रारम्भ हो गया। कुछ समय के बाद यह पत्र दैनिक कर दिया गया। स्व० लाला जी के अथक परिश्रम एवं कर्मनिष्ठा से दैनिक रणवीर की नींव धीरे-धीरे सुदृढ़ हो गई।

क्योंकि वह समय स्वतन्त्रता संग्राम का था, अत: दैनिक रणबीर ने लोगों को दोहरी गुलामी से मुक्त होने के लिए तैयार करने के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिस की इस प्रदेश में नितांत आवश्यकता थी।

1930 में जब महात्मा गांधी को ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार कर लिया तो भारत के अन्य भागों के समान इस राज्य के लोगों ने भी प्रदर्शन और बंद रखा। उस समय भी दैनिक रणवीर की भूमिका उल्लेखनीय थी। परन्तु जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन प्रशंसक महाराजा हरिसिंह 'रणवीर' के सम्पादक लाला मुल्खराज से चिढ़ गए और उन्होंने एक अध्यादेश द्वारा रणवीर के प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। परिणामत: नवम्बर 1931 ई० में रणवीर का प्रकाशन बन्द हो गया, परन्तु कुछ समय के बाद इसका प्रकाशन फिर प्रारम्भ हो जाने पर स्व० लाला जी ने कड़ा परिश्रम करके पत्र का स्तर बढ़ाया। परिणाम यह हुआ कि 'रणवीर' की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई।

सन् 1947 में जब हमारा देश विभाजित और स्वतन्त्र हुआ तो 'रणवीर' पर फिर प्रतिबन्ध लग गया। कारण था इसके द्वारा शेख मोहम्मद अब्दुल्ला को जेल-मुक्त करने के लिए खुला प्रचार करना। परन्तु क्योंकि इसके साथ-साथ स्व० लाला जी के कुशल सम्पादकत्व में ही इस पत्र में मोहम्मद अली जिन्ना की नीतियों को कई बार दुत्कारा गया था। सितम्बर 1947 ई० में जिन्ना की मुस्लिम लीग द्वारा प्रेरित पठानों द्वारा इस राज्य में (विशेष कर कश्मीर घाटी में तबाही में नरसंहार की भी कई बार निंदा की गई थी, अत: इस पत्र पर लगा प्रतिबन्ध बाद में सरकार द्वारा हटा लिया गया था।

बाद में दैनिक उर्दू रणवीर के नियमित प्रकाशन के साथ-साथ स्व० लाला जी ने बच्चों के लिए एक 'रत्न' नामक बाल पत्रिका (उर्दू) का भी प्रकाशन प्रारम्भ किया। इस बाल-पत्रिका का भी सभी ने स्वागत किया था।

परन्तु कदाचित आर्थिक कठिनाई के कारण स्व० लाला जी को कुछ समय के बाद इसे बन्द कर देना पड़ा।

वृद्धावस्था में पदार्पण करते ही अपने सम्पादन कार्य के साथ-साथ स्व० लाला जी पुस्तकें भी लिखने लगे थे। उनकी रचना मेरी पाकिस्तान यात्रा (उर्दू) को जम्मू कश्मीर की कल्चरल एकेडमी ने पुरस्कृत किया था। उनकी दूसरी रचना शेरे डुग्गर लाला हंसराज (उर्दू) को भी पाठकों ने बड़ा सराहा था।

सन् 1956 में स्व० लाला जी की ख्याति उस समय संसार भर में फैल गई थी जब उन्होंने हेलसिंकी (फिनलैंड) में 'विश्व पत्रकार' सम्मेलन में भाग लिया था। उस सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत से जो पत्रकारों का प्रतिनिधि मण्डल गया था स्व० लाला जी उसमें अन्यतम थे।

स्व० लाला जी सच्चे गांधीवादी थे। सादा जीवन ऊंचे विचार उनका जीवन लक्ष्य था। अपने पत्रकारिता के जीवन में लेखन कार्य में व्यस्त रहते हुए भी भारतीय रैडक्रास सोसायटी, समाज कल्याण केन्द्र, वृद्धाश्रम प्रबन्ध समिति, गौरक्षा समिति, वेद मन्दिर बाल निकेतन (अनाथालय) आदि अनेक जनकल्याण संस्थाओं से सक्रियतापूर्वक जुड़े हुए थे।

उन्हें भारत के राष्ट्रपति की ओर से पद्मश्री के सम्मान से भी अलंकृत किया गया था। वे उड़ीसा की एक संस्था आई० एफ० डब्ल्यू० से (कटक) की ओर से 'रोब ऑफ आनर' से अलंकृत हुए। 17 मार्च 1977 में स्व० शेख मोहम्मद अब्दुल्ला ने एक बार ठीक ही कहा था कि लाला मुल्खराज ने पद्मश्री का सम्मान पत्रकारिता के क्षेत्र में कड़े परिश्रम और समर्पण भाव से काम करके ही प्राप्त किया है। इतना ही नहीं एक पत्रकार के नाते उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में अपना जो योगदान दिया है उसकी मिसाल देना कठिन है।

स्व० लाला जी ने भारत तथा पाकिस्तान की अनेक यात्राएं तो की ही थीं परन्तु इसके अतिरिक्त उन की रूस, इंग्लैंड, जर्मनी, चीन तथा अमेरिका आदि देशों की यात्राएं भी उल्लेखनीय हैं। इन यात्राओं से उन्हें जो अनुभव प्राप्त हुए लाला जी ने उन्हें लेखनीबद्ध करके समाज पर बड़ा उपकार किया है। उनके इन्हीं अनुभवों के आधार पर उन्हें ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का विश्वकोश कहा जाता था।

अपनी 88 वर्ष की अवस्था में जब उन्होंने पाकिस्तान की यात्रा की तो सभी आश्चर्य में थे, पर 92 वर्ष की अवस्था में जब वह अमेरिका गए तो उनके सभी मित्रों तथा सम्बन्धियों ने दांतों तले उंगलियां दबा लीं।

वास्तव में स्व० लाला जी को अपने स्वास्थ्य के बारे में कोई चिन्ता नहीं थी। इसके विपरीत उन्हें अपने ऊपर पूर्ण विश्वास था। यही कारण था कि वह 92 वर्षों की अवस्था में अमेरिका केवल गये ही नहीं थे अपितु वहां दो महीने भर रहे भी थे। स्पष्ट है कि उनके भीतर विचित्र आत्म-विश्वास था। इसीलिए तो वे कहा करते थे—"मैं अभी भी युवक हूं और आशा करता हूं कि सौ वर्षों की अवस्था में भी इसी प्रकार युवक ही बना रहूंगा।

96 वर्ष की आयु में बम्बई में अपने पुत्र श्री वेद राही के पास रहते हुए 21 फरवरी 1989 को एक संक्षिप्त बीमारी के उपरांत उन का जीवन सूर्य अस्त हो गया। आज यद्यपि यह महान् व्यक्तित्व हमारे बीच नहीं है तो भी इसके गुण तथा बतलाई हुई कार्यपद्धति आज भी हमारे लिए प्रेरणा स्रोत बनी हुई है। □